© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

# इस्लाम धर्म में अशुभ की समस्या और उसका समाधान

**मो0 असलम**
शोध–छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग
राजनारायण महाविद्यालय
हाजीपुर।

इस्लाम धर्म का प्रादुर्भाव छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। विनोबा ने इस्लाम के दो अर्थ किये हैं – एक शान्ति और दूसरा भगवत्–शरणता। इस्लाम शब्द में सलम धातु है जिसका अर्थ होता है– शरण में जाना। इसी से सलाम शब्द बना है यानि शान्ति। तात्पर्य है कि परमेश्वर की शरण में जाओ शान्ति मिलेगी।[1] इस्लाम धर्म में अल्लाह को छोड़कर दूसरा कोई ईश्वर नहीं है और मुहम्मद उसके रसूल हैं। जमाली साहब ने इस्लाम का शाब्दिक अर्थ मानव का ईश्वर (अल्लाह) के प्रति समर्पण बताया है।[2]

मनुष्य की स्वतंत्र संकल्प–शक्ति के उपयोग से शुभ या अशुभ की उत्पत्ति होती है। लेकिन जो प्राकृतिक अशुभ है जैसे–बाढ़, भूकम्प, सुखा आदि इनका कारण मनुष्य नहीं है। लेकिन नैतिक अशुभ प्राकृतिक अशुभ से ही विकसित होती है। गैलवे के शब्दों में – भूख, अभाव, पीड़ा सचमुच मनुष्य को नैतिक अशुभ की ओर प्रेरित करती है, इसी से नैतिक अशुभ का उद्भव होता है। यदि प्राकृतिक अशुभों का अनुभव

व्यक्ति नहीं करता है तो वह नैतिक अत्याचार करने को बाध्य न होता। मनुष्य की इच्छाशक्ति प्राकृतिक अशुभ के अभाव में अनैतिक कार्य के लिए बाध्य न होता।[3] लेकिन यह भी सत्य है कि नैतिक अशुभ सामाजिक व्यवस्था से भी विकसित होते हैं। इनका प्रभाव सामाजिक संस्थाओं पर भी पड़ता है। इसका स्थायित्व एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक बना रहता है। आधुनिक युग में भी लोगों ने वातावरण के महत्व को स्वीकार किया है, जिसके कारण भी पाप का प्रचार हो रहा है।[4]

इस्लाम धर्म ईश्वरवादी धर्म है। वे जगत् का निमित्त और उपादान कारण भी है। इस्लाम धर्म में अशुभ की समस्या के समाधान स्वरूप मनुष्य की स्वतंत्रता को ही प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः शुभ और अशुभ (शैतान) को उसी ने संसार में भेजा और मानव को चयन करने हेतु स्वतंत्र कर दिया। मानव मस्तिष्क के विकास के साथ–साथ उसकी स्वतंत्रता का भी विकास होता है। मनुष्य उस स्वतंत्रता का चाहे तो सदुपयोग कर सकता है या दुरूपयोग। उसके उपयोग के साथ मनुष्य इस लोक या परलोक में या दोनों में ईश्वर के समान जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। इसीलिए कहा गया है कि जो एक कण भी शुभ या अशुभ कार्य करेगा उसके परिणाम को प्राप्त करेगा।[5] कुरान के ही सूरा 13 में कहा गया है कि जिनको विश्वास है कि औश्र जो शुभ

कार्य करते हैं, उनको सुख और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। नैतिक जीवन का फल शुभ होता है।[6]

इस्लाम धर्म में नैतिक–अनैतिक कर्मों के आधार पर शुभ–अशुभ का विभाजन किया गया है। मानव ज्ञानेन्द्रियों तथा मनस का उपयोग करके विकास करता है। यदि उसका मनस ईश्वर से निर्देशित होता है तो वह शुभ–अशुभ में भेद करना सीख लेता है। यदि ईश्वर से निर्देशित नहीं होता तो वह शुभ के मार्ग पर नहीं चलता। फिर तो उसके जीवन में हानि ही होती है। इस प्रकार ईश्वर का निर्देश तथा उसकी दया ही वह आधार है जिससे वह शुभ के पथ पर चल सकता है और नैतिक कार्य कर सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस्लाम धर्म भी शुभ–अशुभ की जिम्मेदारी मानव पर ही डालता है और कहता है कि मानव नैतिक कर्मों के द्वारा अशुभ से मुहित्त पा सकता है। यदि नैतिक नियमों के उल्लंघन के परिणाम स्वरूप ईश्वर प्राकृतिक अशुभों को उत्पन्न करता है, तो दण्ड स्वरूप उन्हीं लोगों को कष्ट मिलना चाहिए जो वास्तव में नैतिक अशुभ की उत्पत्ति के कारण हैं अथवा जिनके कुकर्म के कारण ईश्वर प्राकृतिक अशुभ का निर्माण करता है। किन्तु प्राकृतिक अशुभ से सत्यनिष्ठ व्यक्ति तथा अन्य उदासीन जीव भी प्रभावित होते हैं। देखा जाए तो अशुभ प्रायः मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है। इससे

प्रभावित होकर एक अच्छे व्यक्ति में भी क्रोध, उदासीनता, निराशा जैसी अशुभ भावनाएँ जन्म लेती हैं। अतः यह स्वीकार करना भ्रामक है कि अशुभ से विश्व की प्रगति में सहायता मिलती है। किसी आदर्श को प्राप्त करने के लिए ऐसी को बाध्यता नहीं है कि उसके विरोधी प्रत्यय को भी स्वीकार किया जाए। यह आवश्यक नहीं कि स्वस्थ, सुखी और आनन्दमय जीवन व्यतित करने के लिए कष्टमय जीवन को अंगीकार कर लिया जाए।

**संदर्भ–सूची :**


1. विनोबा, इस्लाम का पैगाम, पृ0–1
2. जमाली, मुहम्मद फाद्येल, लेटर्स ऑन इस्लाम, पृ0 20–21.
3. Galloway, The Philosophy of Religion, P-519.
4. I bid, P-21
5. कुरान, सूरा, 7/8
6. वही, 13/31